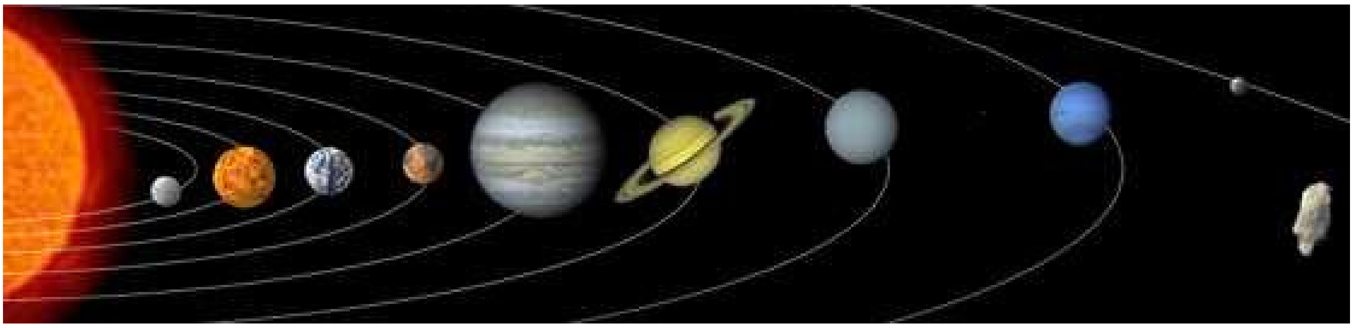

ग्रह / Planets

भारतीय वैदिक ज्योतिष शास्त्र में कर्म फलों का पूर्वानुमान लगाने के लिए मुख्य नौ ग्रह होते हैं, सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु, जो जातक द्वारा पूर्व जन्मों में किए गये कर्म फलों को दर्शाते हैं। **कर्म फल अनुसार हमारी जीवन यात्रा के विभिन्न चरण जैसेः- हमारे शरीर, परिवार, वातावरण, आर्थिक, सामाजिक, व्यवसायिक, स्वास्थ्य, और दामूपत्य आदि निर्धारित होते हैं। इन सबका संक्षिप्त (compact) और जटिल प्रतिचित्रण (sophisticated mapping) आपकी जन्म पत्रिका (horoscope) में सांकेतिक (coded) भाषा में उल्लेख होता है। जन्म पत्रिका मे विभिन्न ग्रहों की शक्तियां, गुण, स्थान (भाव) आदि का सम्मिश्रण (combination) एक ऐसी जटिल सांकेतिक भाषा है जिसे पढ़कर आपकी जीवन यात्रा के बारे में सटीक विवरण दिया जा सकता है।** इसी कारण सभी नौ ग्रह अपना-अपना स्वभाव, गुण धर्म, गोचर, संबन्ध, उच्चराशि, नीच राशि, मंत्र, मंत्र संख्या, रंग, रत्न, गोत्र, वाहन, आधीदेवता, प्रत्यधिदेवता, तत्व, कारक, गति, धातु, नक्षत्र, दशा वर्ष, शरीर के अंग, दिशा, दृष्टि, राशि, भोजन, स्वाद, योग, आकृति, शुभ, अशुभ, पुरूष, स्त्री, नपुंसक, वर्ण आदि का सीधा असर हम पर डालकर हमें प्रभावित करते हैं।

यहां ये स्पष्ट रूप से समझना चाहिए कि ये ग्रह और उनका प्रतिचित्रण (mapping) केवल सूचक (indicator) हैं। इस जन्म में आपको जो कुछ भी प्राप्त होगा वह आपकी कमाई है न की इन ग्रहों का दोष या दया। कर्मानुसार आपको एक ग्रह शुभफल सूचक हो सकता है जबकि वही ग्रह किसी अन्य व्यक्ति को विपरीत अशुभफल सूचक हो सकता है। सब आपके कर्मो का ही खेल है, इन ग्रहों को बुरा-भला नही समझना चाहिए। जब हम शुभ ग्रहों और शुभ भावों आदि के प्रभाव में आते हैं, तो सुख, शांति, सफलता और आनन्द आदि की प्राप्ति होती है, और जब अशुभ ग्रहों और अशुभ भावों आदि के प्रभाव में आते हैं, तो दुःख, अशांति, असफलता और परेशानियों आदि का सामना करना पड़ता है। इन सभी ग्रहों के बारे में जानकर हम ईश्वर की इच्छा का पूर्वानुमान लगा सकते हैं, क्योंकि सभी नौ ग्रह ईश्वर का ही रूप या अवतार हैं, और ईश्वर की इच्छा, कृपा या आशीर्वाद आदि का प्रतिनिधित्व करते हैं। **कल्पना करें कि थोड़े से इन लग्नादि कुण्डलियों में जटिल सांकेतिक भाषा के द्वारा आपका पूरा जीवन पढ़ा जा सकता है। धन्य हैं वे ऋषि जिन्होंने इसका अविष्कार किया और परिमार्जित किया।** ऋषि पाराशर के अनुसार भगवान विष्णु के नौ अवतार, नौ ग्रहों के रूप में निम्न प्रकार से हैं।

रामोऽवतारः सूर्यस्य चन्द्रस्य यदुनायकः।
नृसिंहो भूमिपुत्रस्य बुद्धः सोमसुतस्य च।।
वामनो विबुधेज्यस्य भार्गवो भार्गवस्य च।
कूर्मो भास्कर पुत्रस्य सैंहिकेयस्य सूकरः।।
केतोर्मीनावतारश्च ये चान्ये तेऽपि खेटजाः।
परात्मांशोऽधिको येषु ते सर्वे खेचराभिधाः।।

अर्थात

सूर्य	:	भगवान श्री राम
चन्द्र	:	भगवान श्री कृष्ण
मंगल	:	भगवान नरसिंह
बुध	:	भगवान बुध
बृहस्पति	:	वामन अवतार
शुक्र	:	परशुराम
शनि	:	कूर्मावतार (कछुआ अवतार)
राहु	:	वराह अवतार
केतु	:	मत्स्य अवतार (मछली)

इन सबके अलावा जितने भी अवतार हुए हैं, वे सभी ग्रहों से ही अवतरित हुए हैं, और परमात्मा का अंश होने के कारण देव कहलाएं।

शिवमहापुराण के अनुसार भगवान शिव ने समस्त लोकों के कल्याण के लिए सात वारों की कल्पना की और उनके स्वामियों के रूप में ग्रहों को निश्चित किया, जो प्राणियों के सुख-दुःख के सूचक हैं। जिसमें आरोग्य प्रदान करने वाला वार रविवार है और स्वामी ग्रह है **"सूर्य ग्रह"**, संपत्ति प्रदान करने वाला वार सोमवार है और स्वामी ग्रह है **"चन्द्र ग्रह"**, रक्षा प्रदान और व्याधियों का निवारण करने वाला वार मंगलवार है और स्वामी ग्रह है **"मंगल ग्रह"**, आलस्य, पाप की निवृति और पुष्टि प्रदान करने वाला वार बुधवार है और स्वामी ग्रह है **"बुध ग्रह"**, आयुष्कारक वाला वार बृहस्पतिवार है और स्वामी ग्रह है **"बृहस्पति ग्रह"**, विभिन्न प्रकार के भोग और सुखों को देने वाला वार शुक्रवार है और स्वामी ग्रह है **"शुक्र ग्रह"**, मृत्यु भय को दूर करने वाला वार शनिवार है और स्वामी ग्रह है **"शनि ग्रह"**, साथ ही देवताओं की प्रसन्नता के लिये पांच प्रकार की पूजा पद्धति भी बताई है जैसे मन्त्रों का जप, हवन, दान, तप और वैदिक रीति से सोलह उपचारों से नव ग्रहों की पूजा करना।

पाराशर ऋषि ने कहा है

यस्य यश्च यदा दुःस्थ स तं यत्नेन पूजयेत्।

एषां धात्रा वरो दत्तः पूजिताः पूजयिष्यथ।।

मानवानां ग्रहाधीना उच्छ्रायाः पतनानि च।

भावाऽभावौ च जगतां तस्मात् पूज्यतमा ग्रहाः।।

अर्थातः- यदि आपको किसी अशुभ ग्रह की दशा चल रही हो, और वह ग्रह अशुभ फल देने वाला हो तो, और यदि आप श्रद्धा भक्ति से उस ग्रह का पूजन, मंत्र जप, व्रत, दान आदि करते हैं, तो ब्रह्मा जी के वरदान अनुसार वह ग्रह आपका अशुभ नही करेंगे, अपितु आपका कल्याण करेंगे क्योंकि ब्रह्मा जी ने सभी ग्रहों को वरदान दिया है कि जो जातक श्रद्धा-भक्ति से आपका पूजन, व्रत, दान, जप आदि करें तो आप उनका कल्याण करो।

सभी नौ ग्रहों को एक साथ शांत, बलशाली और प्रसन्न आदि करने के लिए नौ दुर्गा के मंत्रों का जप, पूजा और पाठ को करना या करवाना भी एक अचूक उपाय है, जो एक वर्ष में चार बार आता है चैत्र नवरात्रि (प्रकट नवरात्रि), आषाढ़ नवरात्रि (गुप्त नवरात्रि), आश्विन नवरात्रि (प्रकट नवरात्रि) और माघ नवरात्रि (गुप्त नवरात्रि)।

विज्ञान कहता है कि संसार की उत्पत्ति और विनाश का कारण ग्रह हैं, ज्योतिष शास्त्र भी कहता है कि जातक के विकास और विनाश का कारण भी ग्रह हैं।

सभी नौ ग्रहों का परिचय इस प्रकार से है। प्रत्येक ग्रह एक या दो राशियों के स्वामी होते हैं जैसेः-

राशियां (Signs)	राशियों के चिन्ह (Symbol of Signs)	राशियों के स्वामी (Lord of Signs)	राशि स्वामियों के चिन्ह (Symbol of sign Lords)
मेष (Aries)	♈	मंगल (Mars)	♂
वृष (Taurus)	♉	शुक्र (Venus)	♀
मिथुन (Gemini)	♊	बुध (Mercury)	☿
कर्क (Cancer)	♋	चन्द्र (Moon)	☾
सिंह (Leo)	♌	सूर्य (Sun)	☉
कन्या (Virgo)	♍	बुध (Mercury)	☿
तुला (Libra)	♎	शुक्र (Venus)	♀
वृश्चिक (Scorpio)	♏	मंगल (Mars)	♂
धनु (Sagittarius)	♐	बृहस्पति (Jupiter)	♃
मकर (Capricorn)	♑	शनि (Saturn)	♄
कुंभ (Aquarius)	♒	शनि (Saturn)	♄
मीन (Pisces)	♓	बृहस्पति (Jupiter)	♃

सूर्य ग्रह की पौराणिक कथा

ब्रह्मा जी के मानस पुत्र मरीचि ऋषि हैं, मरीचि जी के पुत्र सप्त ऋषियों (वशिष्ठ ऋषि, अत्रि ऋषि, कश्यप ऋषि, जमदग्नि ऋषि, गौतम ऋषि, विश्वामित्र ऋषि और भारद्वाज ऋषि) में कश्यप ऋषि हैं। कश्यप जी का विवाह संस्कार दक्ष प्रजापति की तेरह कन्याओं के साथ हुआ, जिनमें अदिति से देवताओं का जन्म हुआ, दिति से दैत्यों का जन्म हुआ, दनु से दानवों का जन्म हुआ और खस से राक्षसों का जन्म हुआ आदि। दैत्यों, दानवों और राक्षसों ने एक साथ संगठित होकर देवताओं को पराजित कर उन्हें स्वर्ग से निकाल दिया तथा उनके सभी अधिकार भी छीन लिए, जिससे सभी देवता बहुत दुःखी हुए। अपने पुत्रों को इस प्रकार दुःखी देखकर उनकी माता अदिति भी बहुत दुःखी हुई, इसलिए अदिति ने भगवान सूर्य नारायण से देवताओं की रक्षा हेतु उन्हें पुत्र रूप में प्राप्त करने के लिए कठिन तप और प्रार्थना की, अदिति की प्रार्थना से प्रसन्न होकर भगवान सूर्य अपने हजारवें अंश से अदिति और कश्यप के घर जन्में, इसी कारण इन्हें आदित्य भी

कहा गया है, कहीं यह भी लिखा है कि ब्रह्मा जी ने सृष्टि के आरंभ (आदि) में सबसे पहले सूर्य को उत्पन्न किया इसलिए भी सूर्य को आदित्य कहते हैं और सृष्टि उत्पन्न करने वाले ग्रह होने के कारण इनका एक नाम सविता भी है, सूर्य ने अपने भाईयों (देवताओं) की सेना का संचालन किया और दैत्यों आदि को हराकर देवताओं को विजय दिलायी। आगे चलकर सूर्य का विवाह संज्ञा (शरायु), राज्ञी और प्रभा के साथ हुआ। कई अन्य मतानुसार सूर्य की पत्नियों के नाम प्रभा, छाया, उषा, प्रत्युषा और निक्षुभा आदि हैं। संज्ञा से जुड़वा संतानें यम (मृत्यु के देवता यमराज) और यमी (यमुना नदी) का जन्म हुआ। संज्ञा अपने पति सूर्य से बहुत अधिक प्रेम करती थीं पर वह सूर्य का तेज अधिक दिनों तक सहन न कर सकीं और अपनी जगह अपनी छाया को छोड़कर एक सुन्दर घोड़ी का रूप धारण कर तपस्या में लीन हो गईं। सूर्य छाया को न पहचान सके, छाया और सूर्य से दो संतानें हुईं, शनिश्चर और मनु, छाया का लगाव केवल अपने दो बच्चों (शनिश्चर और मनु) के प्रति था, इस अन्तर को देखकर यम जो न्याय के देवता भी हैं, इस पक्षपाति व्यवहार को सहन न कर सके और अपनी विमाता का विरोध किया, जिसके कारण उन्हें अपनी विमाता से शापित भी होना पड़ा। यम ने अपनी आप बीती अपने पिता सूर्य को स्पष्ट बता दी, सूर्य ने यम को शाप मुक्त कर दिया और इस भेदभाव का कारण जानना चाहा, जिसके लिए सूर्य ने क्रूरता पूर्ण छाया से कारण पूछा, और सत्य का पता लगने पर बहुत दुःखी हुए। सूर्य अपने ससुर (विश्वकर्मा) के पास गए और अपनी विवशता बताई, तब विश्वकर्मा जी ने उनका तेज कुछ कम किया और उसके बाद सूर्य अपनी पत्नी संज्ञा से मिलने गए, आगे चलकर फिर संज्ञा से सूर्य को जुड़वा संतानों अश्विनी कुमारों (देवताओं के चिकित्सक) की प्राप्ति हुई।

सूर्य ग्रह की पौराणिक कथा का ज्योतिषीय संबंध

कठिन तप और प्रार्थना से सूर्य की कृपा की प्राप्ति हो सकती है, सूर्य अपने तेज के कारण क्रूर अवश्य है पर पापी नही है, तेज के कारण पत्नी से अलग होना, पर सत्य का पता चलते ही अपनी विवशता प्रकट करना, इसी सूर्य के तेज के कारण जातक को विवाह और संतान जैसे संबंधों को बनाए रखनें में कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है, इसी तेज के कारण सूर्य के समीप आते ही सभी ग्रह अस्त हो जाते हैं। सूर्य ने देवताओं की सेनाओं का संचालन किया और दैत्यों आदि से देवताओं को विजय दिलाकर अपनी संचालन क्षमता का प्रमाण दिया। जन्म पत्रिका में सूर्य की अवस्था देखकर बताया जा सकता है कि जातक शत्रुओं पर विजयी होगा या शत्रुओं से पराजित होगा। इसी कारण सूर्य यश का भी कारक ग्रह माना गया है।

सूर्य स्वभाव से क्रूर (कठोर) ग्रह माना जाता है, पर पापी ग्रह नही होता। सूर्य एक दिन में 1° चलता है, और लगभग 30 दिनों तक एक ही राशि में रहता है। सूर्य आत्मा का प्रतिनिधित्व करता है। मार्कण्डेय पुराण के अनुसार सूर्य उत्पन्न करता, पालन करता और संहार करता है, इसीलिए सूर्य नौ ग्रहों में प्रमुख ग्रह है। समय की गणना भी सूर्य से ही होती है। इसलिए हिन्दू पंचांग में सूर्य से बनने वाले 12 माह होते हैं जैसेः-

क्रम संख्या	हिन्दी माह के नाम	अंग्रेजी माह के नाम	सूर्य राशि
1	चैत्र	14 मार्च से 13 अप्रैल तक	मीन
2	वैशाख	14 अप्रैल से 13 मई तक	मेष
3	ज्येष्ठ	14 मई से 14 जून तक	वृष
4	आषाढ़	15 जून से 15 जुलाई तक	मिथुन
5	श्रावण	16 जुलाई से 15 अगस्त तक	कर्क

6	भाद्रपद	16 अगस्त से 15 सितम्बर तक	सिंह
7	आश्विन	16 सितम्बर से 16 अक्टूबर तक	कन्या
8	कार्तिक	17 अक्टूबर से 15 नवम्बर तक	तुला
9	मार्गशीर्ष	16 नवम्बर से 15 दिसम्बर तक	वृश्चिक
10	पौष	16 दिसम्बर से 13 जनवरी तक	धनु
11	माघ	14 जनवरी से 12 फरवरी तक	मकर
12	फाल्गुन	13 फरवरी से 13 मार्च तक	कुम्भ

सूर्य सभी नौ ग्रहों में राजा कहा जाता है और सभी ग्रह, नक्षत्र, और राशियां सूर्य के ही चारों ओर घूमते हैं। सूर्य ही जन्म पत्रिका में पिता का कारक है। यदि जन्म पत्रिका में सूर्य पीड़ित हों तो इसका सीधा असर पिता और जातक के स्वास्थ्य पर पड़ता है और पितृदोष होने की सम्भावना भी बढ़ जाती है। राजा होने के कारण यह अपनी बात मनवाने में सफल भी हो जाता है, जिसके कारण जातक में अभिमान और घमंड़ जैसे लक्षण भी दिखाई देतें हैं, एक कारण यह भी है कि सूर्य अग्नि तत्व के साथ एक क्रूर ग्रह भी है, ऋतुओं में परिवर्तन का एक बड़ा कारण सूर्य ही है।

सूर्य ग्रह के कुछ अन्य ज्योतिषीय संबंध निम्न प्रकार के हैंः-

1	कारक	आत्मा, पिता
2	संबंध	पिता
3	स्वभाव	क्रूर
4	गोत्र	कश्यप
5	दिन	रविवार
6	वाहन	सात घोड़े वाला रथ
7	रंग	लाल (ताँबा)
8	दिशा	पूर्व
9	गुण (प्रकृति)	सतोगुण
10	लिंग	पुरूष
11	वर्ण (जाति)	क्षत्रिय
12	तत्व	अग्नि
13	स्वाद	तीक्ष्ण, कटु (कड़वापन)
14	धातु	सोना, तांबा
15	ऋतु	ग्रीष्म ऋतु
16	दृष्टि विशेष	7 (पूर्ण दृष्टि)

17	भोजन	गेहूं
18	शारीरिक अंग	सिर, नेत्र, हड्डी
19	अन्न दान	गेहूं, गुड़
20	द्रव्य दान	घी
21	विंशोत्तरी महादशा	6 वर्ष
22	जप संख्या	7,000
23	रत्न	माणिक्य, (संस्कृत में पद्मराग)
24	उपरत्न	रक्तमणि, लालतुर्मली, सूर्यकान्त मणि, ताम मणि
25	सहचरी	सुवर्णा और छाया
26	चरादि	स्थिर
27	समिधा	अर्क (आक)
28	सूर्य के मित्र ग्रह	चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति
29	सूर्य के सम ग्रह	बुध
30	सूर्य के शत्रु ग्रह	शुक्र, शनि, राहु, केतु
31	उच्च राशि	मेष (0° से 10° तक)
32	नीच राशि	तुला (0° से 10° तक)
33	मूल त्रिकोण राशि	सिंह (0° से 20° तक)
34	स्वग्रही राशि	सिंह (21° से 30° तक)
35	राशि स्वामी	सिंह
36	नक्षत्र स्वामी	कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
37	सूर्य के आधी देवता	अग्नि
38	सूर्य के प्रत्यधि देवता	भगवान शिव (ईश्वर)
39	सूर्य ग्रह का कद	मध्यम (सामान्य)
40	सूर्य ग्रह शुष्कादि में	शुष्क ग्रह

सूर्य ग्रह के कारकत्व

सूर्य ग्रह के कारकत्व अर्थात वे विशेष कारण या विषय वस्तुएं आदि जिनसे हम उस समय पूरी तरह प्रभावित होते हैं, जिस समय हम सूर्य ग्रह की दशा, गोचर, योग और अवस्था आदि में पूरी तरह प्रयत्नशील

रहते हैं या उस आयु अवस्था आदि पर पहुंच जाते हैं, सूर्य ग्रह के वे सभी विशेष प्रभावित करने वाले तत्व निम्न प्रकार से हैंः-

आत्मा (वेद वाक्य है ''सूर्य आत्मा जगस्तस्थुषश्च'' सूर्य जगत की आत्मा है), सहानुभूति, बल-पराक्रम, उदर (पेट), उत्साह, पित्त, सिर संबंधित रोग, ऊन, शस्त्र, तांबा या सोने से बनी वस्तुएं, प्रकाश, विजय, ऊर्जा, वैभव, अग्नि, शिव भक्ति, धैर्य, राजकर्मचारी, महत्वाकांक्षा, अस्थि, यश, प्रतिष्ठा, शक्ति, सेहत या स्वास्थ्य, नेत्र, पिता, राजा, नेतृत्व की क्षमता, राजनीति, निष्ठा, चिकित्सा विज्ञान, बिजली ऊर्जा, गौरव, प्रशासन योग्यता, ग्रीष्म ऋतु, निरोगी रहने की क्षमता आदि।

सूर्य ग्रह से संबंधित उपचार और दान आदि

सूर्य ग्रह को शांत, प्रसन्न और बलशाली बनाकर, सूर्य ग्रह के अशुभ प्रभावों को कम या न के बराबर करने और शुभ प्रभावों को बढ़ाकर और शीघ्र प्राप्त करने के लिए सूर्य ग्रह के लिये निम्नलिखित सरल, प्रभावशाली और पर्यावरणहितैषी उपचार और दान आदि का अपनी क्षमता और सामर्थ्यानुसार प्रयोग में लाएं जैसे प्रत्येक माह के किसी शुभ मुहूर्त पर या कार्तिक माह में तुलसी के पौधे या कोई फलदार वृक्ष लगाएं। रविवार को व्रत रखें और नमक रहित भोजन करें जैसे मीठे चावल, हलवा, दही, रोटी, आदि। लाल रंग की गाय पालें या उसकी सेवा करें। अपने पिता या पिता के समान व्यक्ति की सेवा करें और उन्हे प्रसन्न रखें। सूर्य ग्रह की वैदिक रीति से पूजा करें या करवाएं। माणिक्य रत्न धारण करना, सूर्य को अर्घ्य देना, हरिवंशपुराण का पाठ करना या करवाना, वैदिक या सप्त अक्षरी मंत्र का जप करना चाहिये। लाल रंग की वस्तुओं का रविवार के दिन दान करना चाहिए जैसेः गेहूं, गुड़, नारियल, लाल वस्त्र, ताम्र, मिठाई, फल और घृत आदि। यदि सम्भव हो सके तो देवदारू, केशर, इलायची, रक्त कमल या पुष्प, रक्त चन्दन, मुलेठी और खस आदि के जल से स्नान भी करना चाहिये।

सूर्य ग्रह के लिए मंत्र

निम्नलिखित सूर्य ग्रह के मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र का जप श्रद्धा और विश्वास से किसी शुभ मुहूर्त या शुक्लपक्षीय रविवार के दिन प्रातः काल से आरम्भ करना चाहिये। सूर्य ग्रह के मंत्र का जप अपने सामर्थ्यानुसार, माला से, पूर्व दिशा की ओर मुख करके करें। यदि सम्भव हो तो घी का दीपक जलाकर प्रतिदिन या रविवार और बृहस्पतिवार को अवश्य करना चाहिये। सूर्य ग्रह के मंत्र जप के पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए सूर्य ग्रह के वैदिक मंत्र या पौराणिक मंत्र का जप करना या करवाना चाहिये, और अंत में दशमांश संख्या का हवन भी अर्क (आक) या आम की समिधा से करना चाहिये।

वैदिक मंत्र

ऊँ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।

हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

पौराणिक मंत्र

जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।

तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

ध्यान मंत्र

पद्मासनः पद्मकरः पद्मगर्भः समद्युतिः।

सप्ताश्वः सप्तरज्जुश्च द्विभुजः स्यात् सदारविः।।

सूर्य गायत्री मंत्र

ऊँ आदित्याय विद्महे

दिवाकराय धीमहि।

तन्नोः सूर्यः प्रचोदयात्।।

बीज मंत्र

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।

तांत्रोक्त मंत्र

ऊँ ह्रीं घृणिं सूर्याय नमः।

ऊँ घृणिं सूर्य आदित्याय नमः।

ऊँ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।

सामान्य मंत्र

ऊँ घृणिं सूर्याय नमः।

श्री बल्लभ शरणं ममः।

उपरोक्त किन्हीं एक या अधिक मंत्रों का जप श्रद्धा और विश्वास से प्रातः काल में करना चाहिये।

सूर्य ग्रह का रत्न

माणिक्य (Ruby) सूर्य ग्रह का रत्न है और सूर्य ग्रह का प्रतिनिधित्व करता है। शुद्ध माणिक्य रत्न धारण करने के परिणाम चार वर्ष तक प्राप्त होते हैं। लाल रंग का माणिक्य रत्न सर्वश्रेष्ठ होता है, यदि लाल रंग के साथ श्याम वर्ण भी मिश्रित हो तो भी वह माणिक्य रत्न ही है। शुद्ध माणिक्य रत्न के अभाव में सूर्य ग्रह के उपरत्नों का भी प्रयोग किया जा सकता है जैसेः- रक्तमणि, लालतुर्मली, सूर्यकान्तमणि, ताममणि, रतवा हकीक, गारनेट आदि।

माणिक्य रत्न की सामान्य पहचान

देखने में माणिक्य रत्न रेशेदार, सुर्ख लाल, हाथ में लेने पर वजन में भारीपन वाला लगता है, माणिक्य रत्न से पत्थर पर लकीर खींचने पर माणिक्य रत्न नही घिसता।

माणिक्य रत्न की सामान्य परीक्षण विधियां

गाय के दूध की बूंद माणिक्य रत्न के ऊपर रखने पर गुलाबी दिखाई देती है, माणिक्य रत्न को कांच के गिलास में डालने पर उससे हल्की लाल किरणें निकलती दिखाई देती हैं।

माणिक्य रत्न धारण करने की विधि

माणिक्य रत्न को सोने, चांदी या तांबे की अंगूठी या लॉकेट में बनवाकर, उसकी प्राणप्रतिष्ठा करके या करवाकर, किसी शुभ मुहूर्त में या शुक्ल पक्ष का सूर्य वार या सूर्य की होरा या सूर्य नक्षत्र के दिन सुबह अनामिका अंगुली (Ring Finger) में धारण करना चाहिये।

माणिक्य रत्न धारण करने के लाभ

जन्म पत्रिका में सूर्य ग्रह के स्वामित्व भाव, सूर्य ग्रह स्थित भाव, सूर्य ग्रह की दृष्टि और दशा आदि में सूर्य ग्रह के शुभ प्रभावों को बढ़ानें और अशुभ प्रभावों को कम करने में माणिक्य रत्न सहायक होता है, साथ ही माणिक्य रत्न स्वास्थ्य, वंश वृद्धि, राजकीय क्षेत्र में प्रतिष्ठा, नेत्र रोग, पित्त विकार, हृदय रोग से मुक्ति, शत्रुओं पर विजय, यश, सम्मान, प्रभाव, वैभव, आध्यात्मिक भाव के साथ भौतिक समृद्धियां आदि प्राप्त करनें में भी सहायक सिद्ध होता है।

माणिक्य रत्न धारण करने के लिए निर्देश और सावधानियां

माणिक्य रत्न के पूर्ण शुभ फल प्राप्त करने के लिए अंगूठी या लॉकेट का निचला भाग भी खुला होना चाहिए ताकि माणिक्य रत्न आपके शरीर को छू सके। माणिक्य रत्न धारण करने के बाद यदि संभव हो सके तो तामसिक भोजन का प्रयोग न करें, नही तो कम से कम रविवार के दिन तामसिक भोजन का प्रयोग बिलकुल न करें, धैर्य रखें, क्रोध न करें, झूठ न बोलें और रविवार के दिन यथा शक्ति सूर्य ग्रह का मंत्र जप करें। **माणिक्य रत्न धारण करने के बाद 27 दिन के अन्दर यदि आपको प्रतिकूलता का अनुभव हो तो तुरंत ज्योतिषीय सलाह लें।**

चन्द्र ग्रह की पौराणिक कथा

चन्द्रमा ब्रह्मा जी के मानस पुत्र महर्षि अत्रि और अनुसूया की संतान है। पौराणिक कथा के अनुसार अनुसूया के पतिव्रत्य की चर्चा तीनों लोकों में विख्यात थी, इसी पतिव्रत्य की परीक्षा लेने हेतु त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु और महेश) ने भिक्षुओं का भेष धारण कर अनुसूया के आश्रम पहुंचे और अनुसूया को निर्वस्त्र होकर भोजन कराने के लिए कहा, अनुसूया ने अपने तपोबल के आधार पर तीनों त्रिदेवों को नवजात शिशुओं के रूप में परिवर्तित करके निर्वस्त्र होकर भोजन कराया और अपने पतिव्रत्य और गृहस्थ धर्म का पालन और रक्षा की। किन्तु इस प्रकार त्रिदेवों को नवजात शिशुओं के रूप में देखकर उनके अन्दर प्रबल मातृत्व जाग गया और उन्होंने त्रिदेवों को ही पुत्र रूप में प्राप्त करने के लिए कठिन तप किया, जिसके परिणाम स्वरूप उनको तीन पुत्र क्रमशः दत्तात्रेय, चन्द्रमा और दुर्वासा के रूप में प्राप्त हुए। एक अन्य पौराणिक कथा के अनुसार अत्रि ऋषि की पत्नी अनुसूया ने चन्द्ररूपी कांतिमय पुत्र की कामना से घनघोर तप किया, जिससे उनके नेत्रों से एक द्युति (प्रकाश) निकली, जिसे दसों दिशाओं ने उस कांतिमय तेज को पालन पोषण के लिए अपने गर्भ में रख लिया, किन्तु दसों दिशाओं से वह तेज संभाला न गया और दसों दिशाओं ने उस ज्योति रूपी तेज को पृथ्वी पर गिरा दिया। आगे चलकर ब्रह्मा जी ने उसे संभाला और उस तेज को अनेकों बार पृथ्वी की

परिक्रमा करवायी तथा दसों दिशाओं सहित उस नेत्र द्युति को अनेकों वेद मंत्रों के द्वारा शक्ति मिली और वह चन्द्रमा कहलाया। ब्रह्मा जी ने चन्द्रमा को अनेकों आशीर्वाद दिये और चन्द्रमा को सभी देवता, पित्तर, यक्ष और मनुष्य आदि में आप्यायन (पोषण) करने के लिए नियुक्त किया और साथ ही सभी प्रकार के बीजों, औषधियों, जल और ब्राह्मणों आदि का भी राजा बना दिया। एक अन्य कथा के अनुसार चन्द्रमा का विवाह संस्कार दक्ष प्रजापति की साठ कन्याओं में से सत्ताइस कन्याओं के साथ हुआ है जिन्हें हम आज सत्ताइस नक्षत्रों (अश्विनी, भरणी, कृत्तिका आदि) के नाम से जानते हैं। चन्द्रमा की सभी सत्ताइस पत्नियां सुन्दर, सुशील और पतिव्रता थी, पर चन्द्रमा का अनुराग केवल रोहिणी नाम की पत्नी से सबसे अधिक था और उसी के साथ अधिक समय तक रहते थे, जिससे अन्य पत्नियों को चन्द्रमा के साथ रहने का अवसर नही मिलता था और वे सभी दुःखी होती थीं। इस बात की शिकायत उन्होंने अपनी मां से की और मां ने उनके पिता दक्ष को, दक्ष प्रजापति ने चन्द्रमा को बुलाकर सबसे समान रूप से प्रेम करने के लिए समझाया, परन्तु चन्द्रमा का अनुराग केवल रोहिणी के साथ ही बना रहा, अनेकों बार समझाने के बाद भी जब चन्द्रमा का अनुराग केवल रोहिणी के साथ ही रहा तो दक्ष प्रजापति ने क्रोधित होकर अपने ही दामाद चन्द्रमा को क्षय (गलना या कम होना) होने का शाप दे दिया। प्रजापति दक्ष के शाप से घबराकर चन्द्रमा ने सोमनाथ मंदिर (द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक) बनवाया और भगवान शंकर की आराधना की, भगवान शंकर ने चन्द्रमा की आराधना से प्रसन्न होकर उसे आशीर्वाद दिया, जिसका परिणाम यह निकला कि चन्द्रमा कृष्णपक्ष में दक्ष के शाप से घटते रहते हैं और शुक्लपक्ष में भगवान शंकर के आशीर्वाद से बढ़ते रहते हैं। इस सभी शाप और आशीर्वाद के दौरान चन्द्रमा को अपनी गलती का भी अहसास हो गया और तभी से वह अपनी सभी सत्ताइस पत्नियों को बराबर समय देने लगे, यानि एक पत्नी को एक दिन, इसी लिए चन्द्रमा आज भी एक नक्षत्र में लगभग 24 घण्टों तक रहतें हैं और सत्ताइस नक्षत्रों की परिक्रमा सत्ताइस दिनों में पूरी कर लेते हैं। एक अन्य पौराणिक कथा में मिलता है कि चन्द्रमा का जन्म समुद्र मंथन के दौरान 14 रत्नों के साथ हुआ है। इस दृष्टिकोण से पुत्र हुए चन्द्रमा और पिता हुए समुद्र, जिसका स्नेह प्रमाण आज भी देखने को मिलता है। जब पूर्णिमा के पूर्ण चन्द्रमा की किरणें समुद्र के ऊपर पड़ती हैं तो समुद्र का जलस्तर सामान्य स्तर से अधिक ऊपर हो जाता है जिसे ज्वार भाटा कहते हैं, इसका अभिप्राय यह है कि युवा पुत्र (चन्द्रमा) को देखकर पिता (समुद्र) उसे गले लगाने के लिए ऊपर उठना चाहता है।

चन्द्र ग्रह की पौराणिक कथा का ज्योतिषीय संबंध

चन्द्रमा जो मन का कारक ग्रह भी है, जिसकी चंचलता को दसों दिशाएं भी न संभाल सकीं जो दसों दिशाओं में दिन रात दौड़ता रहता है, उस पर अपनी पकड़ बनाए रखना आसान नही है, पर उचित मंत्रों का प्रयोग करके यह संभव हो सकता है कि मन आपकी पकड़ में आ जाए। ब्रह्मा जी ने सभी जीवों के आप्यायन (पोषण) करने के लिए चन्द्रमा को नियुक्त किया है, इसी चन्द्रमा से जातक की आयु और अरिष्ट का भी सटीक अनुमान लगाया जा सकता है। 14 रत्नों के साथ जन्म लेने के कारण चन्द्रमा को धन का कारक ग्रह भी माना जाता है।

क्षीण चन्द्रमा या घटता हुआ चन्द्रमा या फिर कृष्ण पक्ष अष्टमी से लेकर शुक्ल पक्ष अष्टमी तक का चन्द्रमा दक्ष प्रजापति के शाप के कारण कमजोर या पापी माना जाता है, परन्तु बढ़ता हुआ शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा या फिर शुक्ल पक्ष अष्टमी से लेकर कृष्ण पक्ष अष्टमी तक का चन्द्रमा भगवान शंकर के आशीर्वाद के कारण शुभ और बलशाली माना जाता है। चन्द्रमा एक दिन में लगभग 13° से लेकर 15° बीच में चलता है और एक राशि में लगभग सवा दो (2¼) दिन तक रहता है। चन्द्रमा मन का प्रतिनिधित्व करता है। सभी नौ ग्रहों में चन्द्रमा की गति सबसे तेज होती है। मन का कारक होने के कारण मन में भी विचार तेजी से बदलते रहते हैं।

भारतीय वैदिक ज्योतिष शास्त्रों में चन्द्रमा का महत्व बहुत अधिक है, क्योंकि जातक के जन्म के समय जिस नक्षत्र में चन्द्रमा का गोचर होगा उसी के अनुसार जातक को उसकी पहचान यानि नाम अक्षर या नाम प्राप्त होता है, जिससे वह पूरे जीवन भर प्रभावित रहता है। उसी जन्म नक्षत्र के आधार पर उसको विंशोत्तरी महादशाओं का क्रम प्राप्त होता है, उन्ही क्रमों के अनुसार उसे जीवन भर दशाओं का भोग करना पड़ता है। मूल नक्षत्र आदि का निर्धारण भी चन्द्रमा से ही होता है, चन्द्रराशि की प्राप्ति भी चन्द्रमा से ही होती है। मुहूर्त शास्त्र में चन्द्रमा की उपयोगिता और भी अधिक बढ़ जाती है क्योंकि पक्ष, तिथि, नक्षत्र, त्यौहार, व्रत, आदि सभी का निर्णय चन्द्रमा के गोचर पर ही निर्भर करता है।

चन्द्र ग्रह के कुछ अन्य ज्योतिषीय संबंध निम्न प्रकार के हैं:-

1	कारक	मन
2	संबंध	माता
3	स्वभाव	सौम्य (शुभ)
4	गोत्र	जातमत्रि
5	दिन	सोमवार
6	वाहन	मृग (हिरण)
7	रंग	श्वेत
8	दिशा	पश्चिमोत्तर (West-North)
9	गुण (प्रकृति)	सतोगुण
10	लिंग	स्त्री
11	वर्ण (जाति)	वैश्य/ब्राह्मण
12	तत्व	जल
13	स्वाद	नमकीन, खट्टा
14	धातु	चांदी
15	ऋतु	वर्षा
16	दृष्टि विशेष	7 (पूर्ण दृष्टि)
17	भोजन	चावल
18	शारीरिक अंग	बुद्धि, रक्त
19	अन्न दान	चावल, मिसरी
20	द्रव्य दान	दही
21	विंशोत्तरी महादशा	10 वर्ष
22	जप संख्या	11,000

23	रत्न	मोती, (संस्कृत में मुक्ता)
24	उपरत्न	चन्द्रमणि या चन्द्रकांत मणि
25	सहचरी	रोहिणी
26	चरादि	चंचल
27	समिधा	पलाश(ढ़ाक)
28	चन्द्रमा के मित्र ग्रह	सूर्य, बुध
29	चन्द्रमा के सम ग्रह	मंगल, बृहस्पति, शुक्र, शनि
30	चन्द्रमा के शत्रु ग्रह	राहु, केतु
31	उच्च राशि	वृष (0° से 3° तक)
32	नीच राशि	बृश्चिक (0° से 3° तक)
33	मूल त्रिकोण राशि	वृष (3° से 30° तक)
34	स्वग्रही राशि	कर्क (0° से 30° तक)
35	राशि स्वामी	कर्क
36	नक्षत्र स्वामी	रोहिणी, हस्त,श्रवण
37	चन्द्रमा के आधी देवता	जल
38	चन्द्रमा के प्रत्यधि देवता	पार्वती
39	चन्द्र ग्रह का कद	दीर्घ (लम्बा)
40	चन्द्र ग्रह शुष्कादि में	जलीय ग्रह

चन्द्र ग्रह के कारकत्व

चन्द्र ग्रह के कारकत्व अर्थात वे विशेष कारण या विषय वस्तुएं आदि जिनसे हम उस समय पूरी तरह प्रभावित होते हैं, जिस समय हम चन्द्र ग्रह की दशा, गोचर, योग और अवस्था आदि में पूरी तरह प्रयत्नशील रहते हैं या उस आयु अवस्था आदि पर पहुंच जाते हैं, चन्द्र ग्रह के वे सभी विशेष प्रभावित करने वाले तत्व निम्न प्रकार से हैः-

दिल, मन (वेद वाक्यः-चन्द्रमा मनसो जातः), रूझान, भावना, समझ, प्रेम, प्रसन्नता, आलस्य, कफ, मिरगी रोग, हर्ष, चांदी या चांदी से बना सामान, क्षय रोग, नमक, दक्षता, सुख, वैभव, सम्पन्नता, समृद्धि, कवि, रेस्तरां, फास्ट फूड, पत्रकारिता, फल, फूल, खेती, अन्न, दूध, सुन्दरता, चंचलता व कामातुर, करूणा, दया, समुद्र उत्पाद, विज्ञापन, चित्रकला, फोटोग्राफी, ख्याति (Goodwill), माता, सत्ता, धन, स्त्री, भावुकता, जनसंख्या, दूर की यात्रा, जल सम्बन्ध कार्य, औषधियों का संबंध, संवेदनशीलता, बीज, वर्षा ऋतु आदि।

चन्द्र ग्रह से संबंधित उपचार और दान आदि

चन्द्र ग्रह को शांत, प्रसन्न और बलशाली बनाकर, चन्द्र ग्रह के अशुभ प्रभावों को कम या न के बराबर करने और शुभ प्रभावों को बढ़ाकर और शीघ्र प्राप्त करने के लिए चन्द्र ग्रह के लिये निम्नलिखित सरल, प्रभावशाली और पर्यावरणहितैषी उपचार और दान आदि का अपनी क्षमता और सामर्थ्यानुसार प्रयोग में लाऐं जैसे प्रत्येक माह के किसी शुभ मुहूर्त पर पीपल का या कोई फलदार वृक्ष लगाएं। सोमवार को व्रत रखें। सफेद रंग की गाय पालें या उसकी सेवा करें। अपनी माता जी या उनके समान आयु वाली स्त्री की मदद या सेवा करें और उन्हे प्रसन्न रखें। चन्द्र ग्रह की वैदिक रीति से पूजा करें या करवाएं। चन्द्रमा के वैदिक मंत्र या सप्तअक्षरी मंत्र का जप करें या करवाएं, भगवान शिव की पूजा करें, शिव पुराण का पाठ करें या करवाना चाहिए। मोतियों की माला पहनें या मोती रत्न धारण करें, सफेद वस्तुओं का दान सोमवार के दिन करना चाहिए जैसे दूध, दही, चीनी, सफेद वस्त्र, चावल, मिठाई, फल और घृत आदि। यदि सम्भव हो सके तो सीपी जल, गोदूध, श्वेत चन्दन, स्फटिक, शंख जल और पंचगव्य आदि के जल से स्नान भी करना चाहिए।

जन्म कुण्डली में चन्द्रमा अपना महत्व तो रखते ही हैं पर मैंने चौंका देनें वाले परिणामो की गणना चन्द्र कुण्डली यानि चन्द्रलग्न से होते हुए भी देखी है।

चन्द्र ग्रह के लिए मंत्र

निम्नलिखित चन्द्र ग्रह के मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र का जप श्रद्धा और विश्वास से किसी शुभ मुहूर्त या शुक्लपक्षीय सोमवार के दिन संध्याकाल से आरम्भ करना चाहिये। चन्द्र ग्रह के मंत्र का जप अपने सामर्थ्यानुसार, माला से, पश्चिमोत्तर दिशा की ओर मुख करके करें। यदि सम्भव हो तो घी का दीपक जलाकर प्रतिदिन या सोमवार और बृहस्पतिवार को अवश्य करना चाहिये। चन्द्र ग्रह के मंत्र जप के पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए चन्द्र ग्रह के वैदिक मंत्र या पौराणिक मंत्र का जप करना या करवाना चाहिये, और अंत में दशमांश संख्या का हवन भी पलाश (ढ़ाक) या आम की समिधा से करना चाहिये।

वैदिक मंत्र

ऊँ इमं देवा असपत्न ग्वं सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठयाय महते जान राज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकम्ब्राह्मणाना ग्वं राजा।।

पौराणिक मंत्र

ऊँ दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम्।

नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुटभूषणम्।।

ध्यान मंत्र

श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेताश्वः श्वेतवाहनः।

गदापाणिर्द्विबाहुश्च कर्तव्यो वरदः शशी।।

चन्द्रमा का गायत्री मंत्र

ऊँ क्षीर पुत्राय विद्महे

कलारूपाय धीमहि।

तन्नोः सोमः प्रचोदयात्।।

बीज मंत्र

ऊँ श्रां श्रीं श्रौं सः चंद्राय नमः।

तांत्रोक्त मंत्र

ऊँ ऐं क्लीं सोमाय नमः।

ऊँ श्रीं कीं चं चन्द्राय नमः।

सामान्य मंत्र

ऊँ सों सोमाय नमः।

श्री बिठ्ठल शरणं ममः।

उपरोक्त किन्हीं एक या अधिक मंत्रों का जप श्रद्धा और विश्वास से संध्याकाल में करना चाहिये।

चन्द्रमा ग्रह का रत्न

मोती (Pearl) चन्द्र ग्रह का रत्न है और चन्द्र ग्रह का प्रतिनिधित्व करता है। शुद्ध मोती रत्न धारण करने के परिणाम दो वर्ष तक प्राप्त होते हैं। शुद्ध मोती रत्न के अभाव में चन्द्रमा के उपरत्नों का भी प्रयोग किया जा सकता है जैसे :- चन्द्रमणि, मून स्टोन आदि।

मोती रत्न की सामान्य पहचान

मोती रत्न देखने में श्वेत या हल्का गुलाबी और उज्जवल होता है। हाथ में लेने पर चिकनाई युक्त और वजन में हल्कापन वाला होता है।

मोती रत्न की सामान्य परीक्षण विधियां

गोमूत्र युक्त मिट्टी के पात्र में यदि मोती रत्न दो दिन बाद भी अखण्डित (दाग रहित) हो तो असली मोती है। जल युक्त कांच के गिलास में मोती से किरणें निकलती सी दिखाई देती हैं। दांतों से दबाने पर असली मोती टूट जाता है।

मोती रत्न धारण करने की विधि

मोती रत्न को चांदी की अंगूठी या लॉकेट में बनवाकर, उसकी प्राणप्रतिष्ठा करके या करवाकर किसी शुभ मुहूर्त में या पूर्णिमा के दिन या शुक्ल पक्ष के सोमवार या चन्द्रमा की होरा या चन्द्रमा नक्षत्र के दिन सुबह कनिष्ठिा अंगुली (little finger) में धारण करना चाहिये।

मोती रत्न धारण करने के लाभ

जन्म पत्रिका में चन्द्रमा ग्रह के स्वामित्व भाव, चन्द्रमा ग्रह स्थित भाव, चन्द्रमा ग्रह की दृष्टि और दशा आदि में चन्द्रमा ग्रह के शुभ प्रभावों को बढ़ाने और अशुभ प्रभावों को कम करने में मोती रत्न सहायक होता है, साथ ही मन या मानसिक शक्ति के विकास, क्रोध को शांत करने के लिए, फेफडों से संबंधित रोगों आदि का जल्दी निदान करने में भी सहायक सिद्ध होता है।

मोती रत्न धारण करने के लिए निर्देश और सावधानियां

मोती रत्न के पूर्ण शुभ फल प्राप्त करने के लिए अंगूठी या लॉकेट का निचला भाग भी खुला होना चाहिए ताकि मोती रत्न आपके शरीर को छू सके। मोती रत्न धारण करने के बाद यदि संभव हो सके तो तामसिक भोजन का प्रयोग न करें, नही तो कम से कम सोमवार के दिन तामसिक भोजन का प्रयोग बिलकुल न करें, धैर्य रखें, क्रोध न करें, झूठ न बोलें और सोमवार के दिन यथा-शक्ति चन्द्र ग्रह का मंत्र जप करें। **मोती रत्न धारण करनें के बाद 27 दिन के अन्दर यदि आपको प्रतिकूलता का अनुभव हो तो तुरंत ज्योतिषीय सलाह लें।**

मंगल ग्रह की पौराणिक कथा

हिन्दू पौराणिक शास्त्रों में चार युगों सतयुग (17,28,000 वर्ष), त्रेतायुग (12,96,000 वर्ष), द्वापरयुग (8,64,000 वर्ष) और कलयुग (4,32,000 वर्ष) का वर्णन अनेकों बार आता है। चारों युगों का योग एक महायुग (43,20,000 वर्ष) कहलाता है और जब एक हजार बार महायुग निकाल जायें तो एक कल्प (4,320,000,000 वर्ष) बनता है, जिसे ब्रह्मा जी का एक दिन कहते हैं। इनमें सतयुग की कथा में वैकुण्ठ के जय और विजय नामक दो द्वारपाल सनकादियों के शाप से हिरण्याक्ष और हिरण्यकश्यपु बनें। जिसे क्रमानुसार लोभ और काम की संज्ञा दी गई। लोभ चाहता है कि विश्व की समस्त सम्पत्ति मुझे प्राप्त हो इसलिए हिरण्याक्ष पृथ्वी को चुराकर अनन्त समुद्र के अन्दर ले गया। इस चोरी की घटना का पता जब भगवान विष्णु को लगा तो उन्होंने पृथ्वी के उद्धार के लिए वराह रूप में अवतार लिया और हिरण्याक्ष को रोका और उसके साथ एक भयंकर युद्ध किया, जिसमें हिरण्याक्ष मारा गया और वराह भगवान ने पृथ्वी को यथा स्थान स्थापित कर दिया। उस समय वराह भगवान के शरीर से एक दिव्य तेज निकल रहा था, जिससे प्रभावित होकर पृथ्वी ने उन्हें पति रूप में चाहा, पृथ्वी की इस इच्छा को पूरी करने के लिए उन्होंने एक सुन्दर और मनोरम रूप धारण किया और पृथ्वी के साथ एक दिव्य वर्ष तक रहे जिससे मंगल का जन्म हुआ, इसलिए मंगल को भूमि पुत्र या भूमि सुत भी कहते हैं। कल्पान्तर के अंतरगत एक अन्य कथा में जब प्रजापति दक्ष की पुत्री सती ने दक्ष के यज्ञ में ही अपने प्राण त्याग दिये, जिससे क्रोधित होकर भगवान शंकर ने अपनी जटा के एक बाल के दो हिस्से करके भद्रकाली तथा वीरभद्र को प्रकट किया, जिन्होंने दक्ष प्रजापति सहित उनके यज्ञ का नाश कर दिया, उसके बाद भगवान शंकर सती की याद में बहुत विकल हो गए, इस चित विकलता से निकलने के लिए भगवान शंकर घनघोर तपस्या में लीन हो गए, जिससे उनके शरीर से एक पसीने की बूंद निकली और पृथ्वी पर आ गिरी, उस बूंद को पृथ्वी ने अपने गर्भ में धारण कर लिया और आगे चलकर पृथ्वी ने एक दिव्य बालक को जन्म दिया जिसका नाम मंगल रखा गया।

मंगल ग्रह की पौराणिक कथा का ज्योतिषीय संबंध

मंगल के जन्म को लेकर पुराणों में अनेकों कथाएं मिलती हैं, पर सभी कथाओं में मंगल की माता को भूमि या पृथ्वी ही बताया गया है, इस कारण जन्मपत्रिका में मंगल की अवस्था को देखकर अचल संपत्ति का सटीक अनुमान लगाया जा सकता है। जन्म पत्रिका में मंगल ग्रह का निर्बल और पीड़ित होना दर्शाता है कि अचल सम्पत्ति बनाने या बनाये रखनें में अनेकों अड़चनों का सामना करना पड़ता है, जबकि जन्म पत्रिका में मंगल ग्रह का बलशाली और शुभ ग्रहों से दृष्ट आदि होना दर्शाता है कि आप अपने बल पर अचल सम्पत्ति बनायेंगे और पैतृक अचल संपत्ति का भोग और विस्तार भी करेंगें। मंगल पुरूष ग्रह होने के कारण सन्तान पक्ष को भी बलशाली बनाता है, विशेषतौर पर पुत्र जन्म को लेकर, साथ ही स्त्री का पुरूष की ओर आकर्षण का कारण मंगल ग्रह ही है।

मंगल स्वभाव से क्रूर और पापी है और अशुभ माना जाता है। मंगल एक दिन में लगभग 29 मिनट (angle वाले मिनट) से लेकर 46 मिनट (angle वाले मिनट) तक चलता है। एक राशि में लगभग 45 दिन तक रहता है। मंगल शक्ति और ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करता है। जन्म पत्रिका में मंगल ग्रह से ही पता चलेगा की आपके जीवन में कितना मंगल है और कितना अमंगल। भारतीय ज्योतिष शास्त्र में मंगल एक जिद्दी ग्रह है, बलपूर्वक अपनी बात को मनवानें वाला ग्रह है, और साहस से भरा हुआ और निर्णय लेने की क्षमता इसी ग्रह में सबसे अधिक होती है। यदि बृहस्पति के आशीर्वाद (स्पर्श) से निर्णय सही वक्त और सही दिशा में हो जाए, तो जीवन में मंगल ही मंगल है और यदि शनि का स्पर्श हो जाए तो अमंगल ही अमंगल है। विवाह संस्कार में भी मंगल की अपनी ही एक अलग भूमिका है। कुण्डली के कुछ विशेष स्थानों में बैठकर जातक को मंगली बना देता है और पति-पत्नी के वैवाहिक जीवन को पूरी तरह से प्रभावित करता है।

मंगल ग्रह के कुछ अन्य ज्योतिषीय संबंध निम्न प्रकार के हैं:-

1	कारक	बल, साहस, उर्जा
2	संबंध	भाई (बड़े/छोटे)
3	स्वभाव	क्रूर, पापी, जिद्दी
4	गोत्र	भारद्वाज
5	दिन	मंगलवार
6	वाहन	मेष (भेड़ा)
7	रंग	लाल (ताम्र)
8	दिशा	दक्षिण (South)
9	गुण (प्रकृति)	तमोगुणी
10	लिंग	पुरूष
11	वर्ण (जाति)	क्षत्रिय
12	तत्व	अग्नि
13	स्वाद	तीखा, कड़वा या नीम की तरह
14	धातु	पीतल, तांबा, सोना

15	ऋतु	ग्रीष्म
16	दृष्टि विशेष	4,7,8 (पूर्ण दृष्टि)
17	भोजन	अरहर
18	शारीरिक अंग	मज्जा
19	अन्न दान	मल्का (मसूर), गुड़
20	द्रव्य दान	घी
21	विंशोत्तरी महादशा	7 वर्ष
22	जप संख्या	10,000
23	रत्न	लाल मूंगा, (संस्कृत में अंगारक मणि)
24	उपरत्न	संगमूंगी, विद्रुममणि
25	सहचरी	शक्तिदेवी / ब्रह्मचारी
26	चरादि	चर
27	समिधा	खदिर (खैर) या कत्था
28	मंगल के मित्र ग्रह	सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति, केतु
29	मंगल के सम ग्रह	शुक्र, शनि
30	मंगल के शत्रु	बुध, राहु
31	उच्च राशि	मकर (0° से 28° तक)
32	नीच राशि	कर्क (0° से 28° तक)
33	मूल त्रिकोण राशि	मेष (0° से 12° तक)
34	स्वग्रही राशि	मेष (13° से 30° तक)
35	राशि स्वामी	मेष, वृश्चिक
36	नक्षत्र स्वामी	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
37	मंगल के आधी देवता	पृथ्वी
38	मंगल के प्रत्यधि देवता	स्कन्द (स्वामी कार्तिकेय)
39	मंगल ग्रह का कद	ह्रस्व (छोटा)
40	मंगल ग्रह शुष्काादि में	शुष्क ग्रह

मंगल ग्रह के कारकत्व

मंगल ग्रह के कारकत्व अर्थात वे विशेष कारण या विषय वस्तुएं आदि जिनसे हम उस समय पूरी तरह प्रभावित होते हैं, जिस समय हम मंगल ग्रह की दशा, गोचर, योग और अवस्था आदि में पूरी तरह प्रयत्नशील रहते हैं या उस आयु अवस्था आदि पर पहुंच जाते हैं, मंगल ग्रह के वे सभी विशेष प्रभावित करने वाले तत्व निम्न प्रकार से हैं:-

शक्ति, साहस, निर्णय लेने की क्षमता, पराक्रम, क्रोध, बीमारियां, शत्रु, शस्त्र, सेनाध्यक्ष, दुर्घटनाएं, षड़यंत्र, हठी, अड़ियल, जुनून, हथियार या विस्फोटक, ऊर्जा उत्पादन, खनिज, शारीरिक और मानसिक शक्ति, क्रूरता, शत्रुता, प्रशासक, संधर्ष, अग्नि, पित्त, गर्मी, जख्म, घाव, मंत्री, अंगक्षति, अंगदुर्बलता, युवा, पौरूष, सरपंच, अग्निकांड से क्षति, रक्त, तांबा या तांबे से बनी वस्तुएं, जलने से घाव, अचल सम्पत्ति, पुलिस, नेता, मैकेनिकल इंजीनियरिंग, वैज्ञानिक, विवाद, विपक्ष, युद्ध, ग्रीष्म ऋतु, शारीरिक बल और आग प्रयोग में लाने वाली नौकरियां, ऊर्जा, मित्र, औजार, चिकित्सा जिसमें औजारों का प्रयोग होता है, छोटे भाई या भाईयों, खिलाड़ी, मित्र, जमीन, साहस आदि।

मंगल ग्रह से संबंधित उपचार और दान आदि

मंगल ग्रह को शांत, प्रसन्न और बलशाली बनाकर, मंगल ग्रह के अशुभ प्रभावों को कम या न के बराबर करने और शुभ प्रभावों को बढ़ाकर और शीघ्र प्राप्त करने के लिए मंगल ग्रह के लिये निम्नलिखित सरल, प्रभावशाली और पर्यावरणहितैषी उपचार और दान आदि का अपनी क्षमता और सामर्थ्यानुसार प्रयोग में लाऐं जैसे प्रत्येक माह के किसी शुभ मुहूर्त पर लाल गुलाब के पौधे या फलदार पौधे लागाएं। मंगलवार के दिन व्रत रखें। लाल रंग की गाय पालें या उसकी सेवा करें। अपने छोटे भाईयों, मित्रों और अपाहिज व्यक्तियों की मदद करें और उन्हें प्रसन्न रखें। मंगल ग्रह की वैदिक रीति से पूजा करें या करवाऐं। मूंगा रत्न धारण करें, भगवान शिव की पूजा करें, हनुमान चालीसा या सुन्दरकाण्ड़ का पाठ करें, वैदिक या सप्त अक्षरी मंत्र का जप करें या करवाएं, लाल वस्तुओं का दान मंगलवार के दिन करना चाहिए जैसे लाल वस्त्र, गेहूं, तांबा या तांबे से बनी वस्तुओं का दान, लाल चन्दन, नारियल, गुड़, मसूर दाल, मिठाई, फल और घृत आदि। यदि सम्भव हो सके तो रक्त चन्दन, धमनी, लाल पुष्प, हींग, जटामांसी, माल कंगनी, मौलसिरी और बिल्व की छाल आदि के जल से स्नान भी करना चाहिए।

मंगल ग्रह के लिए मंत्र

निम्नलिखित मंगल ग्रह के मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र का जप श्रद्धा और विश्वास से किसी शुभ मुहूर्त या शुक्लपक्षीय मंगलवार के दिन प्रातः काल से आरम्भ करना चाहिये। मंगल ग्रह के मंत्र का जप अपने सामर्थ्यानुसार, माला से, दक्षिण दिशा की ओर मुख करके करें। यदि सम्भव हो तो घी का दीपक जलाकर प्रतिदिन या मंगलवार और रविवार को अवश्य करना चाहिये। मंगल ग्रह के मंत्र जप का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए मंगल ग्रह के वैदिक मंत्र या पौराणिक मंत्र का जप करना या करवाना चाहिये, और अंत में दशमांश संख्या का हवन भी खदिर (खैर) या आम की समिधा से करना चाहिये।

वैदिक मंत्र

ऊँ अग्निः मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथ्विव्या अयम्। अपा ग्वं रेता ग्वं सि जिन्वति।।

पौराणिक मंत्र

ऊँ धरणीगर्भसंभूतं विद्युतकान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।